रिकार्ड: नैन हीन को राह.... ओम शान्ती प्रातः क्लास 6-1-1967

हे प्रभु, ईश्वर, परमात्मा कहने और पिता अक्षर कहने में कितना फर्क है। हे ईश्वर, हे प्रभु कहने से कितना रिगार्ड रहता है। और फिर इनको पिता भी कहते हैं तो पिता अक्षर बहुत साधारण है। पितायें तो ढेर के ढेर हैं। प्रार्थना में भी कहते हैं हे प्रभु। हे ईश्वर, बाबा कहीं नहीं कहते। हैं तो परमपिता नां। परन्तु पिता अक्षर जैसे दब जाता है। परमात्मा अक्षर ऊंचा हो जाता है। बुलाते भी हैं हे प्रभु नैन हीन को राह बताओ। भले यह गीत तो नाटक आद वालों ने ही बनाया है। मानते तो हैं नां। आत्मायें कहती हैं बाबा हमको मुक्ति जीवन मुक्ति की राह बताओ। प्रभु अक्षर कितना बड़ा है। पिता अक्षर है हल्का। यहां तुम जानते हो बाप आकर समझाते है। लौकिक रीती तो पितायें बहुत है। बुलाते भी है तुम मात-पिता... कितना साधारण अक्षर है। ईश्वर या प्रभु कहने से समझते है कि वो तो क्या नही कर सकते। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आया हुआ है। बाप रास्ता बहुत ही सहज बताते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चे तुम रावण की मत पर काम चिता पर चढ़ कर भस्मी भूत हो गये हो। अभी मैं तुमको पावन बना कर घर ले जाने लिये आया हूं। बाप को बुलाते भी इसलिये हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ। बाप कहते हैं मैं आया हूं तुम्हारी सेवा में। तुम बच्चे भी भारत की आलौकिक सेवा में हो। जो सर्विस तुम्हारे सिवाय और कोई कर नही सकते हैं। श्रीमत पर, पवित्र बन और भारत को बनाते हो। बापू गांधी भी यह आशा रखते थे कि राम राज्य हो। अब कोई मनुष्य तो राम राज्य बना नही सकते। भारत की सेवा कर नां सकें। नही तो प्रभु को पतित पावन कह क्यों बुलाते। अब तुम बच्चों को भारत के लिये कितना लव है। सच्ची सेवा तो तुम करते हो। खास भारत की आम सारी दुनिया की। तुम जानते हो भारत को फिर से राम राज्य बनाते हो। जो बापू जी चाहते थे। यह फिर है बेहद का बापू। यह बेहद की सेवा करते है। इन्होंने बल राज्य लिया परन्तु राम राज्य तो नही कर सकें नां। फिर भी वो ही राक्षसी राज्य है। यह तुम बच्चे ही जानते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार यह नशा रहता है। कि हम राम राज्य बनावेंगे। तुम गवर्मेन्ट के सरवेन्ट हो। इस गवर्मेन्ट को बदला कर, दैवी गवर्मेन्ट बनाते हैं। इस समय है आसुरी ठगाचारी गवर्मेन्ट। तुमको भारत के लिये कितना फखर है। जानते हो सतयुग में यह पावन भूमी थी। अभी तो पतित है। तुम जानते हो अभी हम बाप दवारा फिर से पावन भूमी वा सुख धाम बना रहे है। सो भी गुप्त। श्रीमत भी गुप्त मिलती है। भारत गवर्मेन्ट के लिये ही तुम कर रहे हो नां। श्रीमत पर तुम भारत की ऊंच ते ऊंच सेवा अपने तन मन धन से कर रहे हो। कांग्रेसी लोग कितने जेल आद में गये। तुमको तो जेल आद में जाने की दरकार नही है। तुम्हारी तो है रूहानी बात। तुम्हारी लड़ाई भी है 5 विकारों रूपी रावण से। जिस रावण का सारी पृथ्वी पर राज्य है। तुम्हारी यह सेना है लश्कर भी एक छोटा बेट है। यह भी बेहद का बेट है। तुम बेहद के बाप की श्री मत पर सब को रावण की जेल से छुड़ाती हो। यह जो भक्तिमार्ग के गुरू लोग हैं उनकी जंजीरों से भी छुड़ाते हो। यह भी कितना सामना करते हैं। कहते है यह ब्रह्मा कुमारीयां तो और ही विनाश के लिए आई हैं। यह तो तुम जानते हो इस पतित दुनियां का विनाश होना ही है। तुम शिव शक्तीयां हो नां। शिव शक्ती यह (गोप) भी है। तुम गुप्त रीती भारत की सेवा कर रहे हो। आगे चल सब को पता पडेगा। तुम्हारी है श्री मत पर रूहानी सेवा। उन कांग्रेसीयो जिन्हो ने मदद की है उन्हो को कितनी मदद मिलती है। कोई प्रेजीडेन्ट, प्राईम मिनिस्टर ऐम पी आद2 बनते रहते है। तुम तो हो गुप्त। गवर्मेन्ट जानती हो नही कि यह ब्रह्मा कुमारीयां तो भारत को अपने तन मन धन से श्रेष्ट ते श्रेष्ट सच्च खन्ड बनाती है। भारत सच्च खन्ड था। अब है झूठ खन्ड। सच्च तो एक ही बाप है। कहा भी जाता है गाड इज़ ट्रूथ। तुमको सत्य नर से नारायण बनाने की शिक्षा दे रहे है। बाप कहते है कल्प पहले भी तुमको नर से नारायण बनाया थो। रामायण में तो क्या-2 कथायें लिख दी है। कहते है राम ने बन्दर सैना ली। अभी तुम पहले बन्दर मिसल थे नां। एक सीता की तो बात नही हो सकती। शास्त्रों में कितनी दन्त कथायें लिख दी है। बन्दर वृत्ति तो है नां। सीरत मनुष्य

सीरत बन्दर जैसी है। वाप वैठ समझाते है कैसे हम रावण राज्य का विनाश करायें और राम राज्य स्थापन करते है। इसमें कोई तक्लीफ की वात नही। वो तो कितना खर्चा करते हैं। समझते कुछ भी नही है। बड़े-2लोग सभी जाते है।फारैनस को भी दिखाते है। समझते कुछ नही।अभी वाप वैठ समझाते हैं। तो तुम बच्चों के दिल में उंमग हो कि हम भारत के सच्चे रूहानी सरवैन्ट हैं। वाकी सारी दुनिया रावण की मत पर है।तुम हो राम की श्रीमत पर। राम कहां शिव कहो। नाम बहुत सव दिये हैं। कितनी दाड़ कथायें हैं शास्त्रों में। और उन शास्त्रों को कितना मान देते है। प्रकर्मा दिलाते है। चित्रों की भी प्रकर्मा दिलाते है। वड़ी-2यह रूम रिवाज चलता आया है।यह है सव भक्ति मार्ग। यहांतुम कितनी शान्ती में वैठे हो। जानते हो हम भारत के भारेट वैल्युकुल सरवैन्ट हैं। हम गवर्मेन्ट को चैन्ज करते है श्रीमत पर। कहते भी हैं हे पतित पावन आकर पावन बनाओं। साधु सन्यासी आद तो कर नां सकें। वो तो पावन दुनिया वैकुण्ठ को जानते हीनही है। उनका धर्म ही अलग है। तुम जानते हो सतयुग में हमको कितना सुख मिलता है। कारू का खजाना मिलता है। वहां ऐवरेज आयु भी कितनी वड़ी होती है। वो है योगी, यहां हैं सव भोगी। वो पावन यह पतित कितना रात दिन का फर्क है। कृष्ण को भी योगी कहते हैं। महात्मा भी कहते है। परन्तु वो तो सच्चा महात्मा है। इनकी तो महिमा गाई जाती है स्वगुण सम्पण, 16कला सम्पूर्ण सम्पूर्ण निरविकारी.... इन कलियुगी महात्माओं की थोड़ेई यह महिमा करेंगें। इनकी तो महिमा हो नां सकें। उनकी तो आत्मा और शरीर दोनों पवित्र है। यह तो गृहस्थियों पास भ्रष्टाचार से जन्म लें फिर सन्यासी वनते है।यह वातें अभी तुमको वाप समझाते हैं। गवर्मेन्ट तो है इरीलिजस, अनराईटियस। सतयुग में कैसे थे। रिलीजस राईटियस थे। 100% सालवैन्ट थे। ऐवर हैप्पी में रहते थे।रात दिन का फर्क है। यह सैपरेट तुम ही जानते हो। मनुष्य थोड़ेई समझते है भगवान नें हमको बन्दर सम्प्रदाय का टाईटिल दिया है। रावण नें विलकुल ही बन्दर वुधी बना दिया है। परन्तु अपने को कोई भी बन्दर समझते थोड़ेई है।कितने भ्रष्टाचारी हैं। हम भ्रष्टाचारी है यह कोई समझते नही है। कितनी करप्शन है। कैसे -2किसका होता है भारत ही हेवन था। यह किसीको पता थोड़ेई पड़ता है भारत हेल कैसे वना। ल.ना. की पूजा करते है मन्दिर वनाते है। समझते कुछ भी नही है। ब्र वावा समझाते रहते है अच्छी-2पौजीशन वाले जो है विड़ला को भी समझा सकते हो। इन्होनें यह पद कैसे पाया क्या किया जो इनके मन्दिर वनाते हो? विगर आक्यूपेशन जानें और पूजा करने यह तो पत्थर पूजा अथवा गुड़ियों की पूजा हो गई। और धर्म वाले तो जानते है क्राईस्ट फलानी सम्वंत पर आया। इन प्रसेपटर्स को गुरू कहते है।परन्तु वास्तव में गुरू है नही। सतगुरू तो एक ही है। वाकी सव नाम मात्र गुरू है।वे सव है भक्ति मार्ग के। सतयुग त्रेता में गुरू होता नही है। गुरू चाहिये सदगती के लिये। तो तुम बच्चों को कितना रूहानी गुप्त फखुर होना चाहिये। रूह को खुशी होनीचाहिये। आधा कल्प देह अभिमानी वने है। अव वाप कहते है अशरीरी वनो। अपने को आत्मा समझो। हमारी आत्मा वावा से सुन रही है। और सतसंगों में कव ऐसा नही समझावेंगें। यह रूहानी वाप रूह को वैठ समझाते है।रूह ही सव कुछ सुनती है। आत्मा कहती है मैं प्राईमिनिस्टर हूं। फलानी हूं। आत्मा नें इस शरीर दवारा कहा कि मैं प्राईमिनिस्टर वनी हूं। अभी तुम कहते हो हम आत्मा पुरूषार्थ कर स्वर्ग का देवी देवता वन रहे है। मैं आत्मा इसशरीर दवारा फलाना वना हूं। अहम आत्मा मम यह शरीर है। देही अभिमानी वनने में ही वड़ी मेहनत है। घड़ी-2अपने को आत्मा समझ वाप को याद करते रहो।तो विकर्म विनाश हो जावे। तुम गवर्मेन्ट ओविड़यन्ट सरवैन्ट हो। कितना वड़ा कर्तव्य करते हो। गुप्त रीती से। गुप्त नशा रहना चाहिये नां। हम गवर्मेन्ट के रूहानी सरवैन्ट है। भारत को स्वर्ग वनाते हैं। वापू जी भी कहते थे नई दुनिया में नया भारत हो। नई देहली हो। अभी नई दुनिया तो है नही। यह पुरानी देहली कब्रिस्तान वननी है। अभी इसको परिस्तान थोड़ेई कहेंगें। नई दुनिया में परिस्तान नई देहली वना रहे हैं। यह वड़ी समझ की वातें है। यह वातें भूलनी नही चाहियें। भारत को फिर से सुख धाम वनाना कितना

ऊंच किये है। इन कांग्रेसियों नें क्या किया। और ही दुख धाम बना दिया। ड्रामा प्लान अनुसार सृष्टी पुरानी होनी ही है। दुख धाम है नां। दुख हरता सुख करता एक बाप को ही कहा जाता है। तुम जानते हो बाप हर 5000 वर्ष बाद आकर दुखी भरत को सुखी बनाते है। सुख भी देते है। शान्ती भी देते है। मनुष्य कहते भी है मन की शान्ती कैसे मिले। अभी शान्ती तो शान्ती धाम, स्वीट होम में ही होती है। इनको कहा जाता है शान्ती धाम। जहां आवाज की नाम नही है। सूर्य चांद आद भी नही होते। अभी तुम बच्चों को यह सारा ज्ञान है। बाप ही आकर औविडियन्ट सरवेन्ट बनते है। अब गांधी के हाथ में गीता थी। और कहते थे पतित पावन सीता राम.. बाप को बिलकुल ही जानते ही नही है। उनको भी कहते थे महात्मा। अब महान आत्मा तो सिवाय सतयुग के कही हो नही सकती है। वहां आत्मायें प्योरटी थी. तो पीस प्रासपैरटी भी थी अभी प्योरटी नही तो कुछ भी नही है। प्योरटी का ही मान है। देवतायें प्योअर है तब तो उनके आगे माथा टेकते है। प्योअर को पावन, इम्पयोअर को पतित कहा जाता है। तो वो था हद का बापू जी। यह है सारे विश्व का बेहद का बापू जी। ऐसे तो मेयर को भी कहते सिटी फादर। यह सब गपोड़ों का राज्य है। वहां कोई ऐसी बातें होगी। वहां तो कायदे सिर राज्य चलता है। कुलाते भी है है पतित पावन आओ।

फिर बाप कहते है पवित्र बनो तो कहते है कैसे होगा। फिर बच्चे कैसे पैदा होंगे। सृष्टी कैसे वृधी को पावेगी। उनको यह पता नही कि ल.न. सम्पूर्ण निर्विकारी थे। तुम बच्चों को कितना आपोजिशन सहन करना पड़ता है। ड्रामा में जो कल्प पहले हुआ है वो रिपीट होता है। ऐसे नही कि ड्रामा पर खड़े हो जाना है। ड्रामा में होगा तो मिलेगा। स्कूल में ऐसे बैठे रहने से कोई पास होवेंगे क्या? हर एक चीज लिये मनुष्य का पुरुषार्थ चलता है। पुरुषार्थ बिगर पानी भी नां मिल सकें। सेकिंड बाये सैकिंड जो होता है जो पुरुषार्थ चलता है वो प्रारब्ध के लिये। यह बेहद का पुरुषार्थ करना है, बेहद के सुख लिये। अभी है भक्ति मार्ग की रात ब्रह्मा की रात सो ही ब्राह्मणो की रात। फिर ब्राह्मणों का दिन। शास्त्रों में भी है समझते कुछ भी नही है। यह बाबा खुद भी बैठ कर रामायण गीता भागवत आद सुनाते थे। पण्डित बन बैठें थे। अभी समझते है वो तो भक्ति मार्ग है। अभी भक्ति मार्ग का आधा कल्प पूरा होता है। फिर ज्ञान मार्ग का दिन शुरू होता है। ज्ञान अलग चीज है। बाप कहते है तुम काम चिता पर बैठ कर सभी काले बन गये हो। कृष्ण को भी श्याम सुन्दर कहते है नां। विष्णु को भी, राम भी, कहीं श्याम कहीं सुन्दर बना देते है। अच्छा कृष्ण को तख्यत सर्प ने डसा, राम को किसने डसा? शिव लिंग भी कोई सफेद कोई काला बनाते है। पुजारी लोग कितने अन्ध श्रधालू है। कितनी भूत पूजा है। यह शरीर 5 तत्वों का बना हुआ है नां। शरीर की पूजा गोया 5 तत्वों की पूजा हो गई। इसको कहा जाता है व्यभचारी पूजा। भक्ति पहले अव्यभचारी थी। एक शिव की ही होती थी है। अभी तो देखो क्या-2 पूजा होती रहती है। बन्दर की भी पूजा करते रहते है। बाप वण्डर भी दिखाते है।

नालेज भी समझा रहे है। कांटों से फूल बना रहे है। इनको कहते ही है गार्डन आफ फलावर्स। कराची में एक पठान था। पहरे पर तो वो भी ध्यान में चला जाता था। कहते थे हम वहिश्त में गये। खुदा नें हमको फूल दिया। उनको बड़ा मजा आता था। वण्डर है नां। वो तो 7 वण्डर्स कहते है। वास्तव में वण्डर आफ दी वर्ल्ड तो स्वर्ग है। यह किसीको भी पता नही है। तुम बच्चों को कितना फर्स्ट क्लास ज्ञान मिला है। तुमको कितनी खुशी होनी चाहिये। कितना हाईएस्ट बाप दादा है। और कितना सिम्पल रहता है। बाप की ही महिमा गाई जाती है वो निराकार, निरहंकारी है। बाप को तो आकर सेवा करनी है नां। बाप हमेशा बच्चें की सेवा कर उनको धन दौलत दे खुद वान प्रस्थ ले लेते है। बच्चों को माथे पर कुल्हे पर चढ़ाते है। तुम बच्चे स्वीट होम में जाकर फिर स्वीट बादशाही आकर करेंगें। बाप कहते है हम तो बादशाही नही लेंगे। सच्चा निष्काम सेवा धारी तो एक बाप ही है। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिये। परन्तु माया भुला देती है। इतने बड़े बाप दादा को भुलना थोड़ेई है। डाडे की मिलकियत का कितना फखुर रहता है। तुमको तो बेहद का बाबा मिला है उनकी मिलकियत है। बाप कहते है मुझे याद करो। और दैवी गुण धारण करो। औ